पाठ 12. चरित्रवान बनो

पाठ का परिचय

चरित्रवान व्यक्ति सदैव आदर व सम्मान पाता है। चरित्रहीन व्यक्ति को कोई पसंद नहीं करता। यह आवश्यक नहीं कि धनवान और शक्तिशाली व्यक्ति चरित्रवान हो। सदाचार का पाठ परिवार में माता-पिता, दोस्तों व अध्यापकों से सीखा जा सकता है। हमारे देश में ऐसे ही अनेक चरित्रवान व सदाचारी व्यक्ति हुए हैं। मध्यमवर्गीय परिवार में पैदा होने वाले छत्रपति शिवाजी को उनकी माता जीजाबाई ने चरित्रवान बनने में सहयोग दिया। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू को न केवल देश में बल्कि विदेशों में भी लोगों का प्यार प्राप्त था। शेक्सपीयर ने अपने लेख के माध्यम से लोगों को बताया कि अच्छे चरित्र से ही भाग्य का निर्माण होता है। इसलिए आवश्यक है कि प्रत्येक बच्चा अपने-आप को चरित्रवान बनाने का प्रयत्न करे तथा ईश्वर से प्रार्थना करे कि वह उसे बुराइयों को छोड़कर अच्छाइयों को अपनाने की शक्ति दे।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

चरित्रवान बनना ही जीवन का लक्ष्य रखें। कभी किसी की वस्तु न उठाएँ। किसी को दुख न दें। विद्यालय के नियमों का उल्लंघन न करें। द्वेष की भावना न रखें। गुरुजनों और अपने माता-पिता की अवहेलना न करें।

पाठ का वाचन

अध्यापक/अध्यापिका लेख का आदर्श वाचन करें। वाचन के दौरान कठिन शब्दों के अर्थ स्पष्ट करें। आवश्यक बिंदुओं पर बल दें। चरित्रवान व्यक्ति सत्य बोलने वाले, परिश्रमी, दूसरों से प्रेम करने वाले तथा ईश्वर में विश्वास रखने वाले होते हैं। धोखेबाज़, झूठे, मक्कार, जालसाज़, जुआरी-शराबी व्यक्तियों का चरित्र नहीं होता। बच्चों को ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह उन्हें चरित्रवान बनने में मदद करें।

महत्वपूर्ण चर्चा

बच्चों से चर्चा करें –

- चरित्रवान बनने के लिए वे क्या करते हैं?
- क्या वे भगवान से प्रार्थना करते हैं?
- अपने माता-पिता का कहना मानते हैं?
- विद्यालय के नियमों का पालन करते हैं या नहीं?
- अपने गुरुजनों और माता-पिता की आज्ञा की अवहेलना तो नहीं करते?